StarzSpeak

गंगा माता चालीसा

जय जय जननी हरण अघ खानी।
आनंद करनि गंग महारानी॥

जय भगीरथी सुरसरि माता।
कलिमल मूल दलनि विख्याता॥

जय जय जहानु सुता अघ हनानी।
भीष्म की माता जगा जननी॥

धवल कमल दल मम तनु साजे।
लखि शत शरद चंद्र छवि लाजे॥

वाहन मकर विमल शुचि सोहै।
अमिय कलश कर लखि मन मोहै॥

जड़ित रत्न कंचन आभूषण।
हिय मणि हर, हरणितम दूषण॥

जग पावनि त्रय ताप नसावनि।
तरल तरंग तंग मन भावनि॥

जो गणपति अति पूज्य प्रधाना।
तिहूं ते प्रथम गंगा स्नाना॥

ब्रह्म कमंडल वासिनी देवी।
श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवि॥

साठि सहस्त्र सागर सुत तारयो।
गंगा सागर तीरथ धरयो॥

अगम तरंग उठ्यो मन भावन।
लखि तीरथ हरिद्वार सुहावन॥

तीरथ राज प्रयाग अक्षैवट।
धरयौ मातु पुनि काशी करवट॥

धनि धनि सुरसरि स्वर्ग की सीढी।
तारणि अमित पितु पद पिढी॥

भागीरथ तप कियो अपारा।
दियो ब्रह्म तव सुरसरि धारा॥

जब जग जननी चल्यो हहराई।
शम्भु जाटा महं रह्यो समाई॥

वर्ष पर्यंत गंग महारानी।
रहीं शम्भू के जटा भुलानी॥

पुनि भागीरथी शंभुहिं ध्यायो।
तब इक बूंद जटा से पायो॥

ताते मातु भइ त्रय धारा।
मृत्यु लोक, नाभ, अरु पातारा॥

StarzSpeak

गंगा माता चालीसा

गईं पाताल प्रभावति नामा।
मन्दाकिनी गई गगन ललामा॥

नाम भजत अगणित अघ नाशै।
विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशै॥

मृत्यु लोक जाह्नवी सुहावनि।
कलिमल हरणि अगम जग पावनि॥

जिमी धन मूल धर्म अरू दाना।
धर्म मूल गंगाजल पाना॥

धनि मइया तब महिमा भारी।
धर्म धुरी कलि कलुष कुठारी॥

तब गुण गुणन करत दुख भाजत।
गृह गृह सम्पति सुमति विराजत॥

मातु प्रभवति धनि मंदाकिनी।
धनि सुरसरित सकल भयनासिनी॥

गंगाहि नेम सहित नित ध्यावत।
दुर्जनहुँ सज्जन पद पावत॥

पान करत निर्मल गंगा जल।
पावत मन इच्छित अनंत फल॥

बुद्दिहिन विद्या बल पावै।
रोगी रोग मुक्त ह्वै जावै॥

पूर्व जन्म पुण्य जब जागत।
तबहीं ध्यान गंगा महं लागत॥

गंगा गंगा जो नर कहहीं।
भूखे नंगे कबहु न रहहि॥

जई पगु सुरसरी हेतु उठावही।
तई जगि अश्वमेघ फल पावहि॥

निकसत ही मुख गंगा माई।
श्रवण दाबी यम चलहिं पराई॥

महा पतित जिन काहू न तारे।
तिन तारे इक नाम तिहारे॥

महाँ अधिन अधमन कहँ तारें।
भए नर्क के बंद किवारें॥

शत योजनहू से जो ध्यावहिं।
निशचाई विष्णु लोक पद पावहिं॥

जो नर जपै गंग शत नामा।
सकल सिद्धि पूरण ह्वै कामा॥

StarzSpeak

गंगा माता चालीसा

सब सुख भोग परम पद पावहिं।
आवागमन रहित ह्वै जावहीं॥

धनि मइया सुरसरि सुख दैनी।
धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी॥

कंकरा ग्राम ऋषि दुर्वासा।
सुन्दरदास गंगा कर दासा॥

जो यह पढ़े गंगा चालीसा।
मिली भक्ति अविरल वागीसा॥